वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :4 अंक : 27 | बुधवार 22 मई 2024 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

अतिरिक्त मुख्य सचिव ने की टीबी उपचार सेवाओं की समीक्षा

प्रदेश में सुचारू रूप से हो रही टीबी दवाओं की आपूर्ति स्थानीय स्तर पर खरीद कर उपलब्ध करवाई जा रही दवा

जयपुर. शाबाश इंडिया

प्रदेश में टीबी रोग के उपचार में उपयोग आने वाली सभी आवश्यक दवाइयों की सुचारू आपूर्ति की जा रही है। विगत दिनों कुछ समय के लिए राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन कार्यक्रम के तहत क्षय औषधियों की केन्द्र से आपूर्ति बाधित हुई थी, लेकिन चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग ने त्वरित प्रबंधन कर दवाओं की आपूर्ति सुनिश्चित की। अतिरिक्त मुख्य सचिव शुभ्रा सिंह ने अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि टीबी संक्रमितों का प्रोटोकॉल के अनुसार उपचार सुनिश्चित किया जाए। इसमें किसी तरह की लापरवाही नहीं हो। अतिरिक्त मुख्य सचिव ने टीबी उन्मूलन कार्यक्रम की समीक्षा करते हुए बताया कि प्रदेश में टीबी उन्मूलन के लिए सकंल्पबद्ध होकर टीबी संक्रमण की पहचान व उपचार सेवाओं का संचालन किया जा रहा है। केन्द्र सरकार से कुछ समय के लिए दवाओं की आपूर्ति प्रभावित होने पर भी प्रदेश में बफर स्टॉक के माध्यम से टीबी उपचार के लिए दवाओं की पर्याप्त व्यवस्था सुनिश्चित की गई। साथ ही, स्थानीय स्तर पर अधिकारियों को टीबी की दवा खरीदने के लिए प्राधिकृत किया गया और इसके लिए आवश्यक बजट भी जारी किया गया। अतिरिक्त मुख्य सचिव ने बताया कि अप्रैल एवं मई माह में केन्द्र सरकार से 4-एफडीसी की करीब 1 लाख टेबलेट तथा 3-एफडीसी की करीब 1 लाख 3 हजार टेबलेट्स की आपूर्ति की गई। इसी प्रकार जिलों में स्थानीय स्तर पर अप्रैल और मई माह में करीब 5 लाख 75 हजार टेबलेट्स की खरीद की गई। दवा खरीद के लिए करीब 8 करोड़ रुपये की वित्तीय स्वीकृति जारी की गई। दवाओं की पर्याप्त आपूर्ति के लिए राज्य सरकार ने केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय को पत्र भी लिखा था। अब प्रदेश में टीबी दवा की समुचित आपूर्ति सुनिश्चित की जा रही है।

वैकल्पिक दवाओं से भी सुनिश्चित किया उपचार

सिंह ने बताया कि चिकित्सा विभाग की ओर से इस महत्वपूर्ण स्वास्थ्य कार्यक्रम की नियमित समीक्षा की जा रही है। जहां भी दवाओं की उपलब्धता से संबंधित समस्या सामने आई, वहां तत्काल प्रभाव से दवाओं की आपूर्ति सुनिश्चित की गई है। स्थानीय स्तर पर खरीद के साथ ही जिन जिलों में अधिक मात्रा में दवा उपलब्ध थी, वहां से अन्य जिलों को दवा की आपूर्ति सुनिश्चित की गई। चिकित्सकों द्वारा टीबी के उपचार में उपयोग में आने वाली अन्य वैकल्पिक दवाओं के माध्यम से भी रोगियों का उपचार सुनिश्चित किया गया। सिंह ने बताया कि केन्द्र सरकार से प्राप्त सभी आवश्यक दवाइयों की आपूर्ति एवं दिशा-निर्देश के अनुसार गतिविधियों का क्रियान्वयन किया जा रहा है। सभी अधिकारियों को प्राप्त इनडेंट के अनुसार दवाओं की आपूर्ति करने के निर्देश दिए गए हैं। साथ ही, टीबी पहचान व उपचार सेवाओं की गतिविधियों की सघन मॉनिटरिंग करने के भी निर्देश दिये हैं।

लू-तापघात के दृष्टिगत सभी चिकित्सा कार्मिकों के अवकाश निरस्त

विशेष परिस्थितियों में सक्षम स्तर से स्वीकृति के बाद ही जा सकेंगे अवकाश पर

जयपुर. शाबाश इंडिया

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग ने प्रदेश में लू-तापघात के प्रकोप के दृष्टिगत सभी चिकित्सा कार्मिकों के अवकाश निरस्त कर मुख्यालय पर ही रहने के लिए पाबंद किया है। विशेष परिस्थितियों में सक्षम स्तर से स्वीकृति उपरांत ही कार्मिक अवकाश पर जा सकेंगे। अवकाश स्वीकृति की सूचना निदेशालय को आवश्यक रूप से देनी होगी। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव शुभ्रा सिंह के निर्देश पर इस संबंध में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य निदेशालय ने एक परिपत्र जारी किया है। परिपत्र के अनुसार चिकित्सकों, नर्सिंग एवं पैरामेडिकल स्टाफ के अवकाश निरस्त कर उन्हें लू-तापघात से बचाव एवं उपचार के लिए आवश्यक प्रबंध सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं। निदेशक जनस्वास्थ्य डॉ. रवि प्रकाश माथुर ने बताया कि परिपत्र में निर्देश दिए गए हैं कि चिकित्सा सेवाओं से संबंधित कार्यालयों में चौबीस घंटे कंट्रोल रूम क्रियाशील रहेंगे। आपात स्थिति में नागरिक टोल फ्री नंबर 108, 104 एवं हैल्पलाइन नंबर 1070 पर भी सम्पर्क कर सकते हैं। इन हैल्पलाइन नंबर का व्यापक प्रचार-प्रसार करने के निर्देश दिए गए हैं। परिपत्र में सभी चिकित्सा संस्थानों में लू-तापघात के मरीजों के लिए बैड आरक्षित रखने, आवश्यक दवा एवं जांच सुविधाओं एवं पर्याप्त मात्रा में आईस पैक, आईस क्यूब आदि की उपलब्धता रखने के निर्देश दिए गए हैं। साथ ही, यह सुनिश्चित करना होगा कि एम्बुलेंस में एयर कंडीशनर क्रियाशील हो तथा आपात स्थिति में उपचार हेतु आवश्यक दवा एवं उपकरण उपलब्ध हों। परिपत्र में आशा कार्यकर्ताओं को लू-तापघात से संबंधित व्यापक आईईसी गतिविधियां कर आमजन को गर्मी एवं लू से बचाव हेतु जागरूक करने के निर्देश दिए गए हैं। साथ ही, मनरेगा साइट्स पर मेडिकल किट्स की उपलब्धता, चिकित्सालयों में पानी एवं बिजली की सुचारू आपूर्ति रखने के भी निर्देश दिए गए हैं। इन सब व्यवस्थाओं के संबंध में प्रतिदिन निदेशालय को निर्धारित प्रारूप में सूचना भिजवानी होगी।

मुख्यमंत्री ने अधिकारी कर्मचारियों पर की सख्ती

बिजली-पानी की आपूर्ति से जुड़े अधिकारी नहीं छोड़ेंगे मुख्यालय

जयपुर. कासं

गर्मी के मौसम में प्रदेशवासियों को बिजली-पानी की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने इन दोनों विभागों से जुड़े अधिकारियों को बिना अनुमति मुख्यालय छोड़ने पर रोक लगा दी है। मुख्यमंत्री ने काफी सख्ती की है। सीएम भजनलाल ने ऊर्जा और पीएचईडी मंत्रियों को पानी-बिजली की बढ़ी हुई मांग के अनुसार आपूर्ति सुनिश्चित करते हुए प्रभावी प्रबंधन करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने मुख्य सचिव को

भी गर्मी के मौसम में बिजली की समस्याओं के निराकरण के लिए किए जा रहे प्रयासों की सतत निगरानी और विभागों के मध्य समन्वय सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि आमजन को पीक लोड की स्थिति में भी बिजली कटौती और पानी की किल्लत का सामना नहीं करना पड़े, इसके लिए सभी जरूरी कदम उठाए जाए। सीएम भजनलाल शर्मा ने कहा कि विशेष रूप से ग्रामीण आबादी को बिजली कटौती और पानी की कमी से संबंधित किसी भी समस्या का सामना नहीं करना पड़े, इसके लिए मुख्यमंत्री शर्मा ने निर्देश दिए हैं कि संबंधित विभागों के अधिकारी मुख्यालय पर ही रहें और बिना पूर्व सूचना के मुख्यालय नहीं छोड़ें।

लाल अयोध्या सिर्फ फिल्म नहीं, लंबे संघर्ष की वास्तविक कहानी है: दुष्यंत प्रताप सिंह

उदयपुर. शाबाश इंडिया

कहते हैं सिनेमा समाज का आइना होता है, लेकिन इस आइने के जरिए समाज का स्याह काला सच दिखाने का साहस किसी–किसी में ही होता है। हम बात कर रहे हैं एक ऐसे दिग्गज निर्देशक की जो अपनी फिल्मों के विविध विषयों को लेकर अक्सर चचाओं में रहते हैं। जो कभी वेश्यावृति करने वाले वर्ग विशेष का छिपा हुआ दर्द परदे पर बयां करते हैं तो कभी भू–माफियाओं की दुनिया के काले किस्से मंजरे आम पर ले आते हैं। हम बात कर रहे हैं जिंदगी शतरंज है, त्राहिमाम-और द हंड्रेड बक्स जैसी विविधरंगी फिल्में बनाने वाले सुप्रसिद्ध निर्देशक दुष्यंत प्रताप सिंह की, जो इन दिनों अपनी अपकमिंग फिल्म 'लाल अयोध्या' को लेकर चर्चा में हैं। दुष्यंत न केवल कला जगत की एक नामचीन हस्ती हैं, अपितु इस देश के एक ज़िम्मेदार नागरिक और प्रबुद्ध व्यक्तित्व हैं। जो एक अलग तरह का सिनेमा बनाने के साथ देश-दुनिया में हो रहे बदलावों पर भी पैनी नजर रखते हैं। 'काव्य जगत' के उस 'दुष्यंत'

को सच लिखने के लिए जाना जाता था और 'सिनेमा जगत' के इस 'दुष्यंत' को सच बोलने और अपनी फि ल्मों के जरिए सच दिखाने के लिए जाना जाता है। इनकी आने वाली फिल्म को लेकर हमने उनसे बातचीत की। लीजिए प्रस्तुत हैं उनसे हुइ बातचीत के कुछ अंश..

सवाल: क्या है 'लाल अयोध्या' फिल्म की कहानी?

दुष्यंत: पूरी फिल्म अयोध्या राम मंदिर की थीम पर है। फिल्म में एक खास कालखंड की कहानी है। दरअसल ये फिल्म नहीं एक लम्बे संघर्ष की कहानी है। हमें उम्मीद है यह फिल्म अपने दौर की सबसे अच्छी फिल्म होगी, जो सबके दिलों को छुएगी।

सवाल: फिल्म की शूटिंग के आपने क्या सोचा है? अयोध्या की रीयल लोकेशन में होगी या किसी और जगह?

दुष्यंत: सिनेमा को किसी एक स्थान विशेष में नहीं बांधा जा सकता। यदि निर्देशक की अपने सब्जेक्ट पर पकड़ है तो वह किसी भी लोकेशन पर शूट करके दर्शकों को रीयल फील दे सकता है। बाकि ये अभी स्क्रिप्ट सीक्रेसी का हिस्सा है, जो रिवील नहीं किया जा सकता है। लेकिन हां इतना विश्वास दिलाता हूं कि फिल्म हर हिस्सा दर्शकों को अयोध्या के अस्तित्व का अहसास कराएगा।

सवाल: फिल्म का नाम 'लाल अयोध्या' कैसे पड़ा?

दुष्यंत: दरअसल फिल्म के प्रोड्यूसर अमरजीत मिश्रा के प्रोड्यूसर अपने दौर में कार सेवक रहे हैं, उन्होंने ही ये नाम दिया है। वो खुद प्रथम कार सेवक थे, इसलिए उन्होंने अयोध्या और अयोध्या के बदलते रूप को बेहद करीब से देखा है। वो इस फिल्म के साथ आत्मा से जुड़े हैं।

सवाल: पोस्टर लॉन्चिंग के दौरान पहलाज निहलानी आए थे, फिल्म को लेकर उनकी क्या प्रतिक्रिया थी?

दुष्यंत: पहलाज निहलानी सेंसर बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष रहे हैं। हम सबके लिए वे एक अभिभावक की तरह हैं। ये सब्जेक्ट उनके दिल के भी बहुत करीब है और वे खुद भी इस काम रहे हैं, इसके बावजूद भी उन्होंने हमें अपना आशीर्वाद दिया। ये हमारे लिए गर्व की बात है।

सवाल: दर्शकों को ये फिल्म कब तक देखने को मिलेगी?

दुष्यंत: फिल्म की प्रीप्रोडक्शन का काम चल रहा है। जल्द शूटिंग शुरू हो जाएगी और नवंबर तक फिल्म रिलीज हो जाएगी।

ओमपाल सीलन, फिल्म पत्रकार एवं समीक्षक उदयपुर।

बागौर की हवेली में गूंजे कैमरा, लाइट, एक्शन

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र की चार दिवसीय फोटोग्राफी कार्यशाला शुरू

उदयपुर. शाबाश इंडिया

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र की ओर से चार दिवसीय फोटोग्राफी कार्यशाला का आगाज मंगलवार को हुआ। कार्यक्रम अधिकारी पवन अमरावत, समन्वयक हेमंत मेहता, भूपेंद्र कोठारी और फोटोग्राफी विशेषज्ञों ने गणेश प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर कार्यशाला का विधिवत उद्घाटन किया। इस मौके पर केंद्र सहयोगी सिद्धांत भटनागर, सुनील निमावत, महेन्द्र गहलोत, शंकर तेली सहित अन्य कई उपस्थित रहे। केंद्र निदेशक फुरकान खान ने बताया कि इसमें शहर के वरिष्ठ फोटो जर्नलिस्ट राकेश शर्मा 'राजदीप' और सहयोगी लेकसिटी कैमरा क्लब कॉर्डिनेटर खुशवंत सिंह सरदलिया ने प्रतिभागियों संग पहले दिन दोनों सत्र में पीपीटी के माध्यम से बेसिक फोटोग्राफी की तकनीकी जानकारियां साझा की। उन्होंने बताया कि गणगौर घाट स्थित बागौर की हवेली में रोजाना सुबह 10 से दोपहर 2 बजे दो दो सत्र में आयोजित चार दिवसीय इस कार्यशाला में प्रतिभागी रोजाना पोर्ट्रेट, टेबल टॉप, स्टूडियो फोटोग्राफी और केंडिड शॉट्स के प्रेक्टिकल सेशन भी पाएंगे। बुधवार को कार्यशाला के प्रथम सत्र में प्रतिभागी स्टूडियो फोटोग्राफी की विधा टेबल टॉप और गुरुवार को इनडोर मॉडल शूट और पोर्ट्रेट की बारिकियां सीखेंगे। अंतिम दिन शुक्रवार को ऑन द स्पॉट केंडिड फोटो शूट तथा पोस्ट प्रोडक्शन अलग आकर्षण रहेंगे। सभी प्रतिभागियों को केंद्र की ओर से आकर्षक सहभागिता प्रमाण पत्र भी दिए जाएंगे। **ये सभी बने प्रतिभागी:** मयंक शर्मा, गोविंद सालवी, जिया खत्री, कुलदीप सिंह, चित्रा चारण, लव

पुरोहित, शैलेन्द्रसिंह ढड्ढा, लोकेश तलेसरा, अदनान फारुकी, एडवोकेट आशालता सिंघवी, विजितवीरसिंह राठौड़, हिमांशी व्यास, चिन्मय श्रीमाली, हितिक्षा चौहान, वीरेन्द्र भटनागर, राकेश भट्ट, डिंपल कुमार, जोवियल श्रीवास्तव, अभय पंवार, उत्कर्ष हाड़ा, वीरेन्द्रसिंह राजपूत, मोहित सोनी, गोपाल उर्जय, सौरभ वासु, प्रियंका परवानी, चाहत बालचंदानी, सरोज जांगिड़, खुशी पाठक, शेख बुशरा, रेणुका मुखिया। **रिपोर्ट/फोटो: राकेश शर्मा 'राजदीप'**

27 वर्षों से अंधता निवारण में अग्रणी अलख नयन मंदिर नेत्र चिकित्सालय

अब तक करीब 8 लाख लोगों की निःशुल्क नेत्र चिकित्सा

उदयपुर. शाबाश इंडिया

देश में अंधता निवारण में अलख नयन मंदिर नेत्र चिकित्सालय बीते 27 वर्षों से अग्रणी भूमिका निभा रहा है। यहां अब तक करीब आठ लाख से अधिक को निशुल्क नेत्र चिकित्सा उपलब्ध करवाई जा चुकी है। अलख नयन मंदिर के मेडिकल डायरेक्टर डॉ.लक्ष्मणसिंह झाला ने मंगलवार को पत्रकार वार्ता में बताया कि केंद्र सरकार के राष्ट्रीय अंधता निवारण अभियान से जुड़ कर अलखन नयन मंदिर संस्था अभियान को गति देना चाहती है लेकिन स्थानीय स्वास्थ्य विभाग इसकी अनुपालना में असंवेदनशील बना हुआ है। उन्होंने बताया कि डूंगरपुर, बासंवाड़ा, प्रतापगढ़ जैसे क्षेत्रों में लाखों लोग अंधता के शिकार है। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय अंधता निवारण के लिए अलख नयन मंदिर द्वारा किए गए काम का करीब एक करोड़ रुपए का भुगतान स्थानीय स्तर पर बीते दो तीन साल से बकाया है। यह राशि मिल जाए तो संस्था अंधता निवारण पर और ज्यादा काम कर सकती है। चिकित्सालय निदेशक लक्ष्मी झाला ने बताया कि गांवों में रूबेला एवं कुपोषण बीमारी के कारण जन्मजात मोतियाबिंद होता है। अलख नयन मंदिर ने अब तक 13 लाख

35 हजार से अधिक लोगों को नेत्र चिकित्सा में से 60 प्रतिशत निःशुल्क की गई है। यहां संभाग में सबसे ज्यादा 550 से अधिक कोर्निया प्रत्यारोपित किए और अब तक 3990 नेत्र रोग के निःशुल्क शिविर लगाये है। डॉ. लक्ष्मणसिंह झाला द्वारा व्यक्तिगत स्तर पर सर्वाधिक नेत्र सर्जरी करने पर उनका नाम लंदन बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज किया गया। अलख नयन मंदिर ने तहसील स्तर पर नेत्र रोगियों को ईलाज उपलब्ध करानें के लिये 12 सेन्टर खोल रखे है।

रिपोर्ट/ फोटोः
राकेश शर्मा 'राजदीप'

हम सभी को पुण्य कार्य में भागीदारी निभानी चाहिएः मझेवला

जरूरतमंद विधवा की पुत्री के विवाह में सहयोग देकर संबल प्रदान किया गया

रोहित जैन. शाबाश इंडिया

अजमेर । श्री दिगंबर जैन महासमिति अजमेर एवम श्री दिगंबर जैन महासमिति महिला एवम युवा महिला संभाग अजमेर की वैशाली नगर इकाई के तत्वावधान में अजमेर के अंचल में बसा ग्राम कडेल की रहने वाली चार बच्चो की विधवा माता सीमा देवी धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री हरिराम जी जिनका कैंसर रोग से बहुत इलाज कराने के बावजूद 8 वर्ष पूर्व स्वर्गवास हो गया था की पुत्री दीपा जिसका विवाह आगामी 25 मई को होने जा रहा है में सहयोग प्रदान किया गया। समिति की राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष मधु पाटनी एवम राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य कमल गंगवाल ने बताया कि बालिका की माता मेहनत मजदूरी करके परिवार की जिम्मेदारी संभाले हुए है ने अपनी बेटी के विवाह में असहजता महसूस करते हुए श्री दिगंबर जैन महासमिति के अध्यक्ष अतुल पाटनी से बेटी के विवाह में सहयोग की अपील की जिसे विवाह एवम विवाह उपरांत गृहस्थ जीवन के कार्य में आने वाली सामग्री देकर सहयोग किया गया। जिला परिषद सदस्य महेंद्र सिंह मझेवला ने इस अवसर कहा कि हम सभी को पुण्य कार्य में भागीदारी निभानी चाहिए जिससे ऐसे जरूरतमंद परिवार समाज की मुख्य धारा में जीवन यापन कर सके। महिला संभाग मंत्री सरला लुहाड़िया एवम युवा महिला संभाग मंत्री भावना बाकलीवाल ने बताया कि समिति संरक्षक राकेश पालीवाल,अध्यक्ष अतुल पाटनी,समाजश्रेष्ठी श्रीमती उर्मिला सोगानी धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री नवीन जी सोगानी,पदम चंद जैन, एवम वैशाली नगर इकाई की अध्यक्ष शांता काला,मंत्री अल्पा जैन,इन्द्रा गदिया, अनिला सोगानी,शोभा दोषी आदि के सहयोग से बरी का बेस,15 साडिया,8 लहंगा ओढ़नी, सलवार सूट नाइट ड्रेस, आर्टिफिशियल ज्वैलरी, चूड़ा, पर्स,सौंदर्य प्रसाधन की सामग्री, घर सजाने का सामान, चौकी,ओवन,कुकर,पंखा प्रेस,गैस चूल्हा,सेलो के सभी प्रकार के आइटम,बाथरूम सेट,ब्लैंकेट,कंबल, बेड शीट, दोवड,रसोई के कार्य में आने वाले सभी प्रकार के बर्तन, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, घड़ा,कोठी,परिवारजन के कपड़े,शूज,चरणपादुका, घड़ी सहित अन्य सामग्री प्रदान की गई। अंत में समिति अध्यक्ष अतुल पाटनी ने सभी सेवा सहयोगियों के प्रति आभार ज्ञापित करते हुए बताया कि सामाजिक सरोकार के अंतर्गत इस प्रकार की अबतक 110 परिवार को सेवा दी जा चुकी है जिसे आगे भी जारी रखा जाएगा। इस अवसर पर वरिष्ठ उपाध्यक्ष ताराचंद सेठी, विजय पांड्या सहित समिति के अन्य सदस्य भी मोजूद रहे।

वेद ज्ञान

आत्मज्ञान की अनुभूति आवश्यक

जिसने अपने अस्तित्व, स्वाभिमान व देश की सुरक्षा को भुला दिया, उसे प्रकृति ने हमेशा सजा दी है। हम जब भी प्रकृतिमय होकर अपनी अस्मिता के लिए, अपने आनंद के लिए, अपनी मर्यादा की सुरक्षा के लिए आगे बढ़े हैं, प्रकृति हमारा स्वागत करती है। फूल खिलकर हमारा स्वागत करते हैं। नदियां कल-कल कर बहती हैं और हमें सुख प्रदान करती हैं। यह जंगल, यह हरियाली हमें आनंद प्रदान करते हैं। यह सब प्रकृति हैं। यही प्रकृति आपके अंदर भी है। आप साधारण मानव नहीं हैं। आप मनु की संतान हैं जिन्होंने नए ढंग से इस मानव जाति की रचना की है। आप कश्यप अदिति की संतान हैं। आप ब्रह्मा के पुत्र हैं। आपके इष्ट मर्यादा पुरुषोत्तम राम हैं। आपके अंदर देवता भी है और दानव भी है। यदि आप देवता बनना चाहते हो, तो अंतस की यात्रा करो। बाहरी जगत तो आपके जीने की व्यवस्था है। बाहर का जगत आपके साथ नहीं जाएगा। आप अपने जीवन की यात्रा कर रहे हो। इस यात्रा पर आप आज से नहीं, लाखों-करोड़ों वर्षों से चले आ रहे हो। अनेक जन्मों के फल के रूप में आपने यह जन्म पाया है। हम सब कर्म कर रहे हैं। हम सब मानव हैं, लेकिन हमने तपस्या करके अपने अंतस के सत्य को जाना है। यह मैंने अनुभव किया है। चाहे कोई भी हो, स्त्री हो या पुरुष वह आत्मज्ञान का अहसास कर सकता है। ऋषियों-मुनियोंने परमात्मा को पाने के लिए कठिन परिश्रम किया है। वैज्ञानिकों ने खोज करके पृथ्वी के उपजाऊ तत्वों को हमारे लिए उपयोगी बनाया है। हमें सिविलाइज्ड बनाया है। अंधेरों को दूर किया है। आवागमन के साधनों को सुलभ करवाया है। मनुष्य को सुसंस्कृत बनाया है। यह सब मनुष्य का विज्ञान है। यह ऋषियों-मुनियों का विज्ञान नहीं है। उन्होंने परमात्मा की अनुभूति करने के लिए अंतस के विज्ञान की खोज की है। मुनियों का विज्ञान अपने अस्तित्व की खोज का विज्ञान है। एक धर्म का विज्ञान हुआ और एक भौतिक विज्ञान हुआ। दोनों ने कितनी कठिन तपस्या की है आप मनुष्य होकर डर गए। आप दोनों को उपलब्ध नहीं हुए। आपने अपने जीवन का सदुपयोग नहीं किया, क्योंकि आपने अपने को नहीं जाना।

संपादकीय

जंगलों की आग बेहद गंभीर समस्या...

उत्तराखंड के जंगलों में आग का सिलसिला अभी जारी है। करीब 2,000 हेक्टेयर से ज्यादा वनों पर इसका असर पड़ा है। इस साल वनों में आग की करीब 1000 घटनाएं हुईं और कई जगह ये रिहायशी इलाकों तक भी पहुंच गई है। पर जंगलों की आग इस राज्य के लिए कोई नया मुद्दा नहीं है। बीते दो दशकों में हमने ऐसी कई घटनाएं देखी हैं। इस बार की आग तो अप्रत्याशित भी नहीं थी, क्योंकि इस साल उत्तराखंड में शीतकालीन वर्षा भी कम हुई। जब-जब ऐसी स्थिति बनती है, वनों की नमी में कमी आती है। इस बार तो भीषण गर्मी से पतझड़ भी ज्यादा हुआ, इससे बची-खुची नमी भी उड़ गई। पर सवाल है, क्या ऐसी घटनाएं रोकी जा सकती हैं? असल में वनों की आग के मुद्दे को समझने में हम अभी भी पीछे हैं। पहले जब वनों में आग लगती थी तो गांव के गांव इसको बुझाने में जुट जाते थे। एक गांव का काम अगर आग बुझाने का होता था, तो दूसरे गांव का दायित्व उसके लिए पानी और खाना लाने का था। एक तरह से यह एक ऐसी व्यवस्था थी, जिसमें सभी ग्रामसभाएं व वन पंचायतें जोर-शोर से जुट जाती थीं। क्योंकि वे वनों को अपनी संपदा मानते थे और अपना दायित्व भी समझते थे। पर जब से 1988 में नई वन नीति आई, जन-जंगल के बीच एक दूरी बन गई। वैसे सरकार के प्रयत्नों को नकारा नहीं जा सकता। पर उसके मुट्ठी भर कर्मचारी नाकाफी हैं। 100-100 हेक्टेयर में अगर एक फॉरेस्ट गार्ड होगा तो आग कैसे बुझ पाएगी? इसलिए इस काम में सामूहिकता ज्यादा जरूरी है। आज सबसे बड़ी पहल यह होनी चाहिए कि गांवों और वन पंचायतों को नए सिरे से जोड़ा जाए, जिसमें उनके अधिकार और रुचियां भी सुरक्षित हों ताकि वे वनों को अपना हिस्सा मानें। जब भी जंगलों में आग लगती है, वहां के वन्यजीवों को नुकसान के साथ जलस्रोतों पर प्रतिकूल असर पड़ता है। हिमालय के ऊंचाई वाले इलाकों में एरोसोल की समस्या बढ़ रही है। यही आग ब्लैक कार्बन के रूप में समस्या को और गंभीर बना रही है। इस तरह के संकट से निपटने के लिए हमें वन क्षेत्रों को जल संग्रहण क्षेत्र में तब्दील करना होगा। इससे कई बातों का समाधान निकल सकता है। दरअसल जंगलों में आग पहले सतह पर लगती है, फिर कैनोपी फायर की तरफ बढ़ जाती है। ऐसे में अगर हम वनों के अंदर ही जल छिद्र बनाकर छोटे-छोटे ताल-तलाब बना लें और जब भी वर्षा हो, इनमें पानी संग्रहीत करके वनों की नमी को बरकरार रखा जा सकता है। इससे सतह की आग जैसी घटनाएं ज्यादा नहीं फैलेंगी। ऐसे प्रयोग हो चुके हैं। 'हेस्को' ने खुद वन विभाग की सहायता से अपनी नदी को संचित करने के लिए यहां जल छिद्र का निर्माण किया और एक नदी को पुनर्जीवित किया। अब यह एसा इलाका बन चुका है, जहां वनों की आग जीत नहीं पाती है। आज वन पंचायतों को जोड़ना भी जरूरी है। वनों की आग फैलने के पीछे सबसे बड़ा कारण पत्तियों का गिरना है, जो कि गर्मियों में आग का कारण बनती हैं। **-राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

गुणवत्ता पर सवाल

सिंगापुर, हांगकांग के बाद नेपाल ने जिस तरह कुछ भारतीय कंपनियों के मसालों के आयात पर पाबंदी लगाई, वह चिंताजनक है। इसलिए और भी अधिक, क्योंकि इस बीच न्यूजीलैंड, अमेरिका आदि ने भी यह कहा है कि वे भारत से आयात होने वाले मसालों की गुणवत्ता की जांच करेंगे। यह ठीक है कि एक के बाद एक देशों की ओर से भारतीय मसालों की गुणवत्ता पर सवाल उठाए जाने पर सरकार ने यह कहा है कि वह नए मानक तैयार करने के साथ ही यह भी देखेगी कि भारतीय मसाला कंपनियों के खिलाफ विभिन्न देश जो कदम उठा रहे हैं, उसके पीछे कहीं कोई साजिश तो नहीं है, लेकिन अच्छा होता कि सरकार तभी चेत जाती, जब सिंगापुर और हांगकांग ने एमडीएच एवं एवरेस्ट कंपनियों के मसालों में हानिकारक पदार्थ पाए जाने की शिकायत करते हुए उनके आयात पर पाबंदी लगा दी थी। चूंकि भारत मसालों का सबसे बड़ा निर्यातक है और उनके निर्यात से देश को अच्छी-खासी विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है, इसलिए भारतीय मसाला बोर्ड के साथ-साथ सरकार को समय रहते सजगता दिखानी चाहिए थी। मसालों की गुणवत्ता को लेकर पहले भी सवाल उठते रहे हैं। कई बार यह सामने आ चुका है कि देश में बिकने वाले विभिन्न कंपनियों के मसालों की गुणवत्ता ठीक नहीं होती। उनमें अखाद्य वस्तुएं वस्तुएं तक मिलाई जाती हैं। बात केवल मसालों की ही नहीं है। अन्य अनेक खाद्य एवं पेय पदार्थों के साथ-साथ दवाओं की गुणवत्ता की भी है। यह किसी से छिपा नहीं कि किस तरह कुछ देशों ने भारत से आयात होने वाली खांसी की दवा को विषाक्त बताते हुए उस पर पाबंदी लगाई थी। इसके बाद भारत सरकार को कार्रवाई करने के लिए विवश होना पड़ा था। प्रश्न यह है कि आखिर भारतीय उत्पादों की गुणवत्ता पर दूसरे देशों में सवाल उठने के बाद ही सरकार और उसकी एजेंसियां क्यों चेतती हैं? भारत में खाद्य एवं पेय पदार्थों के साथ दवाओं की गुणवत्ता के साथ समझौता होता ही रहता है। यह इसीलिए होता है, क्योंकि जिन पर भी यह सुनिश्चित करने का दायित्व है कि मानकों से कोई समझौता न होने पाए, वे लापरवाही का परिचय देते हैं। यह कहने में संकोच नहीं कि इसका कारण संबंधित अधिकारियों का भ्रष्टाचार है। यह निराशाजनक है कि भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण न तो भारतीय कंपनियों के उत्पादों की गुणवत्ता की सही तरह छानबीन कर पाता है और न ही बहुराष्ट्रीय कंपनियों के उत्पादों की। अब जब भारतीय उत्पादों का निर्यात बढ़ रहा है, तब सरकार को यह सुनिश्चित करना ही होगा कि न केवल देश में बिकने वाले उत्पादों की गुणवत्ता सही हो, बल्कि निर्यात होने वाले उत्पादों की भी। सरकार के साथ ही उद्यमियों को भी चेतना होगा। उन्हें अपने उत्पादों की गुणवत्ता को विश्वस्तरीय और विश्वसनीय बनाने के लिए अतिरिक्त प्रयत्न करने होंगे।

भगवान बुद्ध का मार्ग शाश्वत आनंद प्राप्ति का मार्ग है

पदमचंद गांधी

बुद्ध पूर्णिमा वैशाख मास की शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा का दिन है ' इस शुभ दिन भगवान बुद्ध ने नेपाल के लुंबिनी नामक स्थान पर शाक्य सम्राट शुद्ध ओ धन एवं माता माया देवी के प्रांगण में 563 ईशा वर्ष पूर्व जन्म लिया ' यह वही दिन था जिस दिन 528 ईशा वर्ष पूर्व उन्होंने बोधगया में एक वृक्ष के नीचे बौद्ध ज्ञान प्राप्त किया और यह वही दिन था जहां कुशीनगर में 483 ईशा वर्ष पूर्व 80 वर्ष की आयु में नश्वर देखकर त्याग कर दिया ' यह एक अद्भुत सहयोग है जहां जन्म, बोधी ज्ञान एवं निर्माण इसी दिन अर्थात वैशाख शुक्ल पूर्णिमा को प्राप्त किया। यह दिन भगवान बुद्ध को समर्पित है इसलिए इस दिन को बुद्ध पूर्णिमा के नाम से जानते हैं। भगवान बुद्ध ने लुप्त हो रही मानवीयता को नवजीवन का वरदान दिया। परमात्मा की सृष्टि रूप झील में भगवान बुद्ध, बुद्ध ज्ञान के ऐसे खिले हुए कमल पुष्प थे जिनकी ज्ञान सुरभि में मानवता की सोपान चढ़े' सिद्धार्थ के हृदय में जीवन मृत्यु के मूल प्रश्नों पर चिंतन मनन चलता रहता था 'वे सोचते जब सब कुछ अस्थाई है,नश्वर है, मिटाने योग्य है, तो इतने उपद्रव, भाग दौड़, आरंभ सारंभ, किसके लिए? इस भावना ने उन को झकझोर दिया और वे संसार से विरक्त होने लगे ' उनमें करुणा, मैत्री ,और प्रेम के बीज अंकुरित होने लगे ' यशोधरा से विवाह होने पर तथा राहुल नामक पुत्र प्राप्ति के बाद भी संसार से अनासक्ति बनकर, मोह त्याग कर सत्य की खोज में निकल पड़े ' अपने प्रिय अश्व कंटक और सेवक चनना को राज्य की सीमा तक साथ रखा और वहां पर राजश्री वस्त्र, स्वर्ण आभूषण एवं अलंकरण का त्याग कर स्वयं के केश को नदी में विसर्जित कर साधारण वस्त्र पहने हुए सत्य के मार्ग पर चल पड़े ' मीना महीना तक चावल का एक दाना ग्रहण करके जीवन यापन करते रहे ' अनेक को कष्ट सहने तथा हठयोगी की पराकाष्ठा को पार कर शरीर को कृश्य एवं सुखा दिया ' 7 वर्ष की कठिन साधना और त्याग के बाद बोधी प्राप्त नहीं होने पर बोधी प्राप्ति हेतु संकल्प करके साधना में लीन हो गए ' तीन दिन और तीन रात के बाद उन्होंने सत्य का बोध हो गया ' जिस वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ वह वृक्ष आज भी बोधगया में साक्षी है ' पास के गांव की एक युवती सुजाता रोज उसे वृक्ष की पूजा करने आती और बुद्ध को भोजन देकर चली जाती ' लेकिन आज के दिन जब वह पहुंची तो अलौकिक आभा देख कर उन्हें बुद्ध के नाम से संबोधित किया , और सिद्धार्थ बुद्ध बन गए ' बोधी प्राप्ति के बाद उन्होंने अपने पांच शिष्यों को पहली बार धार्मिक उपदेश दिया ' इस उपदेश से समाज में पच प्रथा का प्रचलन प्रारंभ हुआ ' पांच प्रथा की नींव यहीं से पड़ी ' भगवान बुद्ध पहले ऐसे गुरु थे जिन्हें उनके उन मार्गदर्शकों ने गुरु के रूप में स्वीकार किया ' श्रावस्ती में उनके एक शिष्य अनिरुद्ध ने बुद्ध को तथागत अर्थात जो अजर अमर है, ने कहीं जाता है, और न कहीं आता है -का नाम दिया ' तब से भी तथागत कहलन लगे '

एक बार तथागत विचरण करते हुए वापस अपने राज्य में पहुंचे तो पत्नी यशोधरा ने प्रश्न किया जो अपने घर से भाग कर खोज' क्या वह घर में नहीं मिल सकता था ? बुद्ध चुप रहे ' फिर से यशोदा ने पूछा-- अपने एकमात्र पुत्र को देने के लिए आपके पास क्या है ? बुद्ध बोले - बुद्धत्व ' इस प्रकार पुत्र को वसीयत के रूप में सन्यास देने की प्रथम घटना थी, पुत्र राहुल सन्यासी बनकर 51 वर्ष तक धर्म प्रचार करते हुए कल धर्म को प्राप्त कर गए। भगवान बुद्ध ने सही अर्थों में मनुष्य को जीवन जीना सिखाया, स्वयं को जानना सिखाया, जीवन की नश्वरता में अनुभव करना सिखाया ' जिसका प्रभाव विश्व के मानव जाति पर पड़ा ' इसके प्रभाव से यह धर्म अधिकांश देशों में फैल गया। भगवान बुद्ध ने सबसे पहले स्त्रियों के लिए संन्यास का दरवाजा खोल' ' वैशाली की नगरवधू आम्रपाली ने उन्हें अपना गुरु बनाया और संन्यास की दीक्षा ली ' उनके प्रभाव से माता रानी प्रज्ञवती, पत्नी यशोधरा ने भी दीक्षा अंगीकार कर ली ' इस प्रकार हजारों की संख्या में दीक्षाएं हो गई ' इसमें भिक्षुणी खेमा ,प्रज्ञा धारा ,धर्म देना, विशाखा आदि प्रमुख थी ' भगवान बुद्ध ने जीवन जीने के लिए पंचशील के सिद्धांत और अष्टांगिक मार्ग प्रतिपादित किया ' जीवन को श्रेष्ठ बनने के लिए अहिंसा ,चोरी न करना, वासना से मुक्ति , झूठ का परित्याग और नशे से बचाना उपदेशित किया ' जीवन को सरल बनाने के लिए जीवन को सितार के तार की तरह रखने की प्रेरणा दी तथा अतिवाद से बचने का उपाय बताया और उपदेश दिया और कहा कामसुख ,भोग सुख में लिप्त होना और शरीर को पीड़ा देना इन दोनों अतिया को छोड़कर जो मध्यम मार्ग है , जो अंतर दृष्टि देने वाला है , ज्ञान करने वाला है , शांति देने वाला है वही मध्यम मार्ग अर्थात अष्टांग मार्ग है ' जिसमें सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प , सम्यक वचन , सम्यक क'म , सम्यक जीविका , सम्यक व्यायाम, सम्यक स्मृति, और सम्यक समाधि है ' यही सम्यक अर्थात ठीक उचित एवं संतुलित जीवन के लिए होता है।इस प्रकार स्पष्ट है भगवान बुद्ध ने चेतना के उसे आयाम को स्पर्श किया जिसे चेतना का शिखर कहते

हैं उस स्तर पर मनुष्य मनुष्य ने रहकर भगवान हो जाता है ,बुद्ध बन जाता है' भगवान बुद्ध ने अपने ही एक शिष्य लोहार के यहां विषाक्त भोजन ग्रहण करने को शरीर छोड़ने का माध्यम बनाया ' उनकी देह यात्रा की समाप्ति के हो जाने के बाद भी चेतना के जगत में की आज भी वे उज्जवल नक्षत्र के रूप में मौजूद है जो शाश्वत आनंद प्राप्ति की प्रेरणा देते हैं।

श्री शांति नाथ दिगंबर जैन मंदिर लाल कोठी में महा समिति के पदाधिकारियों ने शिविर का अवलोकन किया

जयपुर. शाबाश इंडिया। दिगंबर जैन महा समिति के द्वारा दिनांक 15 मई से 24 मई तक आयोजित धार्मिक संस्कार शिक्षण शिविर के अंतर्गत आज श्री शांति नाथ दिगंबर जैन मंदिर लाल कोठी में महा समिति के पदाधिकारियो ने शिविर का अवलोकन किया। इसमें राजस्थान अंचल के अध्यक्ष अनिल जैन , राष्ट्रीय सयुँक्त मन्त्री डॉ राजेन्द्र कुमार जैन, कार्याध्यक्ष डॉ णमोकार जैन केंद्र , जयपुर पश्चिम संभाग के अध्यक्ष निर्मल संघी, सचिव महेंद्र छाबड़ा निर्मल कासलीवाल तथा मंदिर समिति के सचिव की प्रदीप जैन उपस्थित थे। आगन्तुक अतिथियों का माल्यार्पण के द्वारा डॉक्टर ज्ञानचंद जैन, पदमचंद भाँवसा, रमेश ठोलिया, रोहित जैन, महेंद्र भौंच, राजेश बैनाडा, आशीष सेठी के द्वारा किया गया। इस अवसर पर महासमिति के द्वारा शिक्षकों संजय शास्त्री श्रमण संस्कृति संस्थान साँगानेर, श्रीमती मंजुलता छाबड़ा श्रीमती सुनीता भौंच एवं बिंदिया कासलीवाल का अभिनंदन किया गया। अनिल जैन ने अपने उद्बोधन में शिविर की विशेषताओं के बारे में बताया। प्रदीप जैन ने धन्यवाद ज्ञापित किया गया , कार्यक्रम का संचालन महेन्द्र छाबड़ा के द्वारा किया गया ।

गणिनी आर्यिका स्वस्तिभूषण माताजी सानिध्य मे 9 दिवसीय सम्यकज्ञान शिविर का हुआ शुभारभ

अति हर चीज की बुरी होती है: स्वस्तिभूषण माताजी

केशोरायपाटन. शाबाश इंडिया। परम पूजनीय भारत गौरव गणिनी आर्यिका 105 स्वस्तिभूषण माताजी सानिध्य मे 9 दिवसीय सम्यकज्ञान शिविर का शुभारंभ अतिशय क्षेत्र पर हुआ। इस क्रम मे सर्वप्रथम मुनिसुव्रतनाथ भगवान का अभिषेक शांतिधारा गुरु माँ के सानिध्य मे सम्पन्न हुयी। उसके बाद भव्य समारोह मे सम्यकज्ञान शिविर का शुभारभ किया जिसमे श्रीजी के चित्र का अनावरण एवं दीप प्रज्वलन क्षेत्र प्रबंधकार्यकारिणी के द्वारा किया गया । चेतन जैन एवम विश्वास जैन ने बताया कि प्रबंध कार्यकारिणी एवम नगरजन की और से गुरु माँ को भक्तिभाव के साथ वर्षायोग 2024 हेतु निवेदन किया जिसे गुरु माँ ने गदगद भाव से सुना। इस अवसर पर अध्यन कराने आए विद्वत जन का सम्मान किया गया । उन्होने बताया की यह शिविर 29 मई तक चलेगा। गुरु माँ ने कहा कि अति हर चीज की बुरी होती है अनुशासन बनाने के लिए गुस्सा अच्छा है लेकिन हमेशा गुस्सा ही करते रहे यह अच्छा नहीं है। माताजी ने कहा अधिक दवाई खाना अधिक खाना घातक होता है अति हर चीज की बुरी होती है मोबाइल ज्यादा चलाना भी घातक होता है। एक उदाहरण के माध्यम से बताया की सब्जी मे तेल डालना अच्छी बात है ज्यादा डाल दिया तो। उन्होने कहा अति सर्वत्र वर्जयन्ति इसलिए जो चीज आपको सबसे अच्छी लगती है सबसे पहले उसे छोड़ो चाय ज्यादा सबसे ज्यादा अच्छी लगती है सबसे पहले वह छोड़ो जो चीज तुम्हे ज्यादा अच्छी लगती है वो तुम्हे बीमार करती है वो तुम्हे कमजोर करती है यह कमजोरी एक दिन तुम्हारी आदत बन जाएगी यह आदत तुम्हारा माइनस पॉइंट बन जाएगी बच्चो को भी अति को छोड़ने के लिए कहे और उनसे कहे अति अच्छी नहीं होती। उन्होने कहा तीर्थंकरों मे वीर का गर्मी मे नीर का लगने वाले शिविर का बड़ा ही महत्व है। -**अभिषेक जैन लुहाडिया रामगंजमंडी की रिपोर्ट**

अष्टापद यात्रियों ने पदमपुरा में सामुहिक अभिषेक किया, सांगानेर जिनालय के भी दर्शन किए

जयपुर. शाबाश इंडिया। अष्टापद यात्रा संघ बांसवाड़ा डुंगरपुर के 91यात्रियों ने आज प्रातः जयपुर के पास शिवदासपुरा पदम प्रभु अतिशय क्षेत्र के दर्शन कर सामूहिक अभिषेक का लाभ लिया। यात्रा संघ के अजीत कोठिया डडूका ने बताया की महिलाओं ने पदमप्रभु भगवान की सामूहिक पूजा अर्चना की। यात्रियों ने पदम प्रभु के चरण छतरी के दर्शन किए जहां ये चमत्कारी पाषाण प्रतिमा प्रकट हुई थी। रानिला तीर्थ के लिए रवाना होने से पूर्व यात्रियों ने जयपुर के समीप एतिहासिक संघीजी के दिगंबर जैन मन्दिर के दर्शन किए। इससे पूर्व डुंगरपुर शहीद पार्क एवं बांसवाड़ा मे वीरोदय तीर्थ से यात्रियों पृथ्वीराज जैन, पुष्पा जैन, अजीत कोठिया, कुसुम कोठिया, गिरीश जैन, अंशुमाला जैन , अशोक बंडी, प्रमिला बड़ी, सरोज जैन, उमेश जैन, अजित कुमार नागदा, प्रवीण जैन वरदा, मनीषा जैन, रीना जैन, हेमलता जैन, अरुणा दोसी, वीणा जैन, अनील जैन, मंजुला जैन,अशोक जैन, जयश्री शाह, मोहनलाल जैन, लता जैन,शांतिलाल जैन, शकुंतला जैन, कनक मल जैन, मंजुला के जैन, जयंतीलाल जैन, लक्ष्मी जैन, सूरजमल जैन, जबल जैन, महावीर जैन, सूर्या जैन, खुशीलाल जैन, रमनलाल जैन, अमृतलाल जैन, मणिलाल जैन, जयंतीलाल जैन एवं लक्ष्मीलाल रामगढ़ को विदा किया गया।

श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर मीरा मार्ग में "श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविर" का भव्य आयोजन

शिविर का शुभारंभ 15 मई को भव्य जुलूस के साथ हुआ जिसमें हाथो में कलश, दसधर्म के बैनर, जैन ध्वज और मस्तक पर जिनवाणी माँ को धारण कर जैन धर्म प्रभावना और पाठशालाओं की महत्ता स्वरूप नारे लगाते हुए मंदिर जी से आदिनाथ भवन पहुंचे।

जयपुर. शाबाश इंडिया

संस्कारों का बीजारोपण पचपन में नहीं बचपन में ऐसी भावना पर आधारित श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर के अंतर्गत संचालित संत श्री सुधासागर आवासीय कन्या महाविद्यालय व दिगम्बर जैन महिला महासमिति के संयुक्त तत्वावधान में दिगम्बर जैन मंदिर मीरा मार्ग स्थित आदिनाथ भवन में वार्षिक शिविर (15 मई से 30 मई) बड़े ही उत्साहपूर्वक चल रहा है । शिविर का समय प्रातः 8:30 से 9:30 है जिसमे लगभग 110 बच्चे, महिलाएं व पुरुष धर्मलाभ ले रहे हैं। शिविर मे जैन धर्म शिक्षा भाग प्रथम द्वितीय, तृतीय, भक्तामर और छहढाला की कक्षाओं का संचालन हो रहा। शिविर का शुभारंभ 15 मई को भव्य जुलूस के साथ हुआ जिसमें हाथो में कलश, दसधर्म के बैनर, जैन ध्वज और मस्तक पर जिनवाणी माँ को धारण कर जैन धर्म प्रभावना और पाठशालाओं की महत्ता स्वरूप नारे लगाते हुए मंदिर जी से आदिनाथ भवन पहुंचे। आदिनाथ भवन में शिविर का उद्घाटन समाज के प्रतिमाधारी श्रावक विमल पचेवर और उनके परिवार के कर कमलों द्वारा हुआ। अपने उद्बोधन में संस्कारों का महत्त्व और पाठशालाओ की महत्ता का विवेचन करते हुए अभिभावकों से बच्चों को पाठशाला भेजने का निवेदन किया। विद्यासागर कलश की स्थापना एवं दीप प्रज्ज्वलन शिविर में ज्ञान दान देने आई विदुषी बहनों सुश्री दिव्यांशी दीदी और सुश्री अपूर्वा दीदी ने एवं मंदिर महिला समिति

के सहयोग द्वारा हुआ। कार्यक्रम में समाज के गणमान्य महानुभाव, मातृत्व शक्ति की उपस्थिति सराहनीय रही। 17 मई को श्री सुधासागर आवासीय कन्या महाविद्यालय सांगानेर की निर्देशिका श्रीमती डा. वन्दना श्री दिगम्बर जैन महासमिति महिला अंचल राजस्थान की अध्यक्षा श्रीमती शालिनी बाकलीवाल एवं अंचल कोषाध्यक्ष श्रीमती विद्युत लुहाड़िया एवं उपाध्यक्षा श्रीमती सुशीला छाबड़ा शिविर का अवलोकन करने पधारे, शिविर के वरिष्ठ संयोजक सुभाष चौधरी एवं संयोजिकाओ श्रीमती डा. शालिनी, श्रीमती स्वर्ण केशी, श्रीमती संस्कृति ने उनका स्वागत किया एवं शिविर के बारे में जानकारी दी क शालिनी जी बाकलीवाल और उनकी सहयोगियों ने शिविर की प्रशंसा करते हुए कहा कि बच्चे का आठवां जन्मदिन सम्यकवर्धिनी दिवस के रूप में मनाना चाहिए। बच्चे को धूमधाम से मंदिर लेकर जाये एवं उससे अभिषेक करवायें। शिविर में विदुषी बहनों एवं पाठशाला शिक्षिकाओ श्रीमती ज्ञानमती, श्रीमती बीना, श्रीमती समता, श्रीमती एकता एवं श्रीमती मंजू द्वारा बच्चो को अनूठे ढंग से तराशा जा रहा है। बच्चों को बड़े ही सरल और सुगम ढंग से जैन धर्म की शिक्षा दी जा रही है। शिविर मे विभिन्न प्रकार की प्रतियोगताएँ भी करवाई जा रही है कशिविर के सुगम संचालन मे समिति अध्यक्ष परम मुनि भक्त सुशील पहाडिया, मंत्री राजेंद्र सेठी सहित संपूर्ण समिति का सहयोग है। प्रतिदिन शिविर का समापन सामूहिक जिनवाणी स्तुति द्वारा होता है। बच्चों को भक्ष्य-अभक्ष्य का ध्यान रखते हुए फल, सूखे मेवे और स्टेशनरी प्रभावना पुण्यार्जकों द्वारा भेंट की जाती है।

शैक्षणिक शिविर में पक्षियों के लिए दाना-पानी व जीव दया की दी जानकारी

जयपुर. शाबाश इंडिया

जनकपुरी ज्योति नगर में संत श्री सुधासागर आवासीय कन्या महाविद्यालय के तत्वावधान में चल रहे श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविर में मंगल प्रार्थना के बाद भीषण गर्मी में जीव दया व पक्षियों के लिए दाना- पानी की व्यवस्था की जानकारी दी गई। मन्दिर समिति अध्यक्ष पदम जैन बिलाला ने बताया की जैन युवा मंच के अध्यक्ष अमित शाह , नीरज जैन तथा युवा महा सभा के प्रदीप जैन व विनोद जैन कोटखावदा आदि ने मन्दिर जी के आस पास में परिण्डे लगाये व वितरित किए। दीप प्रज्वलन मयंक सुलोचना पाटनी परिवार ने किया जिनका सम्मान जे के जैन, रमेश काला, निकिता साखूनियां, प्रियंका बाकलीवाल आदि ने किया। शिविर में बताया गया कि सिद्धांत प्रवेशिका में पढ़ रहे छात्र द्वादश वर्षीय में प्रथम वर्ष के लिए रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं। शिविर की परीक्षाएं 28 मई को होगी।

कवि हृदय पंडित विकर्ष शास्त्री को भामाशाह श्रविका श्रेष्ठी सुशीला पाटनी व धुलियांन जैन समाज ने किया सम्मानित

धुलियांन. शाबाश इंडिया। जैन समाज के जाने माने विद्वान प्रखर वक्ता, सरस्वती पुत्र, कवि हृदय विकर्ष 'शास्त्री' सलेहा अद्भुत प्रतीभा के धनी हैं। साथ ही युवा विधानाचार्या है जो अपनी अनूठी भक्तिशैली और वाकपटुता के लिए चर्चित है। विगत दिन पश्चिम बंगाल की धर्म नगरी धूलियान में पधारी भामाशाह श्रविका श्रेष्ठी श्रीमती सुशीला पाटनी व सम्पूर्ण जैन समाज धूलियान ने विशेष प्रतिभा के कारण विशेष अलंकरण से विकर्ष शास्त्री जी को सम्मानित किया।

श्री दिगंबर जैन मंदिर मोहनबाडी में धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्रवण संस्कृति संस्थान सांगानेर की ओर से श्री दिगंबर जैन मंदिर मोहनबाडी में धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन विगत 15 मई से चल रहा है। मंदिर कमेटी अध्यक्ष राजेंद्र जैन ने बताया कि शिविर में 60 बच्चों ने पूजा का प्रशिक्षण प्राप्त किया। श्रमण संस्कृति संस्थान की ओर से सुश्री रिया, संस्कृति व आर्ची द्वारा शिक्षण शिविर में धर्म की शिक्षा दी जा रही है।

अंजली गोयल की प्रथम पुण्यतिथि पर रक्तदान शिविर का हुआ आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया। अंजली गोयल की प्रथम पुण्यतिथि पर तलवारिया मैरिज गार्डन, 80 फीट रोड़, महेशनगर, जयपुर मे स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जयपुर ग्रेटर वार्ड 64 के पार्षद राजू अग्रवाल, जयपुर ग्रेटर वार्ड 78 के पार्षद रवि उपाध्याय एवं प्रदेश संयोजक (वरिष्ठजन प्रकोष्ठ) भाजपा राधेश्याम उपाध्याय, नवीन भंडारी ट्रस्टी श्रीराम आशा पूरण चैरिटेबल ट्रस्ट ,विपिन कुमार गुप्ता, अक्षय गुप्ता, सोश्यल सर्विस डी सी एम, विशाल गोयल आदि अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में फिजियोथैरेपी डॉ. कोनिका भोजक एवम्एस डी एम ब्लड बैंक का प्रमुख योगदान रहा शिविर मे कुल 104 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया रक्तदान दाताओ को जांच रिपोर्ट, दान दाता कार्ड, प्रशस्ति-पत्र एवं उपहार प्रदान किए गए।

अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी के प्रवचन से...

बाहर से सुलझा हुआ दिखने के लिये अन्दर से बहुत उलझना पड़ता है...!

आदमी भी कैसा अदभुत प्राणी है? वह जीते जी कभी शांत नहीं होता, वह कसम खा कर बैठा है, जब तक जिऊंगा, अशांत ही जिऊंगा। जीते जी कभी शांत नहीं होऊंगा। तभी तो कोई मरता है तो कहते हैं, आज फलां आदमी शांत हो गया। मैं आपसे कह रहा हूं-मरकर शांत हुए तो क्या शांत हुए, जीवन की साधना तो यह है, कि तुम जीते जी शांत हो जाओ। जो जीते जी शांत हो जाता है वह संत हो जाता है, वह मुनि सम हो जाता है, वह ज्ञानी बन जाता है। मुर्दे का शांत होना एक मजबूरी है, और मजबूरी का नाम सोनिया गांधी है। तो तुम जीते जी शांत होने को राजी हो जाओ। मरने के बाद तो मुर्दा शांत होता है। यदि तुमसे कोई कहे अरे बाबू कब शांत हो रहे हो? तो आप और अशांत हो जाओगे। इसलिए तुम मुर्दा नहीं, तुम जीवंत इंसान हो। अपने स्वभाव में जियो। फिर देखो सुख, शान्ति आनन्द कैसे नहीं बरसता...!

-नरेंद्र अजमेरा, पियुष कासलीवाल औरंगाबाद

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com